श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ____ ४ , शहर सितम्बर - 2022

विद्यार्थी का नाम ____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	पापभीरू
(२)	विरल
(३)	ओघे
(४)	यश
(५)	अन्नथ सुत्र मे
(६)	पाप
(७)	केवलज्ञान
(८)	सक्रिय
(९)	परिपूर्णता
(१०)	ठंडी
(११)	एकेन्द्रिय
(१२)	तस्स उत्तरी करण।
(१३)	गुणीजन
(१४)	प्रतिक्रमण
(१५)	चंदनबाला
(१६)	चंपापुरी
(१७)	सुरभिगंध
(१८)	तुच्छता
(१९)	शीतलनाथ
(२०)	सिद्दो

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	मूकदोव
(२)	शातावेदनीय कर्म
(३)	इर्यापथिकी
(४)	विमलनाथ
(५)	सूक्ष्म कुंथुआ
(६)	चंडरुद्राचार्य
(७)	धन वैभव
(८)	अभयदान
(९)	समचतुरस्त्र संस्थान
(१०)	विष्णुरानी
(११)	मिच्छामी दुक्कड़म
(१२)	पुष्पदंत
(१३)	प्रार्थना
(१४)	लोगस्स
(१५)	आदेय नामकर्म
(५)	अंनतनाथ
(६)	छींक आने से
(७)	मनुष्यद्विक
(८)	रत्न
(९)	यश
(१०)	खेद पहुचाया हो
(११)	दूर करने वाला
(१२)	निर्माण
(१३)	जंघा तक
(१४)	ओस
(१५)	कृमि
(१६)	सुर्य
(१७)	शल्यरहित
(१८)	सौभाग्य
(१९)	चक्कर आने से
(२०)	सर्वव्यापीपना

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	पाप
(२)	उधई
(३)	मेरे द्वारा
(४)	मकडी के जाले

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	5	(६)	7
(२)	8	(७)	9
(३)	6	(८)	10
(४)	1	(९)	4
(५)	2	(१०)	3

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	9
(२)	563
(३)	4
(४)	54
(५)	13
(६)	42
(७)	19
(८)	93
(९)	1824120
(१०)	45

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	10
(२)	×	(२)	20
(३)	✓	(३)	4
(४)	×	(४)	15
(५)	✓	(५)	11
(६)	✓	(६)	9
(७)	×	(७)	18
(८)	✓	(८)	21
(९)	×	(९)	12
(१०)	✓	(१०)	5

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____ जांचनेवाले की सही ____

प्रश्न - ८

१. जीवोत्पत्ति न हो उसके लिए हमे हमेशा सावधानी रखना चाहिए। जैसे बड़े घर बनाए तो उनकी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए ताकी कानखजूरे जैसे जीवो की उत्पत्ति ना हो फर्नीचर मे खटमल उत्पन्न न हो अनाज मे इल्लीया, कीड़े ना पड़े बहुत से ऐसे काम है जो प्रतिदिन की क्रियाओ मे आते है। और जीवो उत्पन्न होते है। हमे उन्हे सावधानी पूर्वक ज्यादा से ज्यादा अभयदान देने का काम करना चाहिए। हमारे घरो मे जीवनाशक का उपयोग नही करना चाहिए।

२. श्री शीतलनाथ प्रभु तीसरे भव मे पुष्करद्वीप के महाविदेह क्षेत्र मे पद्मोत्तर राजा थे। प्रभु ने वीस-स्थानक की आराधना कर तीर्थंकर पद बांधकर दसवे देवलोक मे देव हुए। वहा से भद्दिलपुर मे दृढरथ राजा की नंदरानी से पोष सुदी बारस को जन्मे। प्रभु का लांछन श्रीवत्स सुवर्णकांती वाले थे। पोष वदि बारस को एक हजार राजाओ के साथ दिक्षा ली। मार्गशिर्ष वदि चौदस को केवलज्ञान हुआ। सम्मेदशिखर जी के उपर एक हजार मुनियो के साथ मासिक अनशन चैत्र वदि दुज को मोक्ष गए। इक्यासी गणधरो सहित एक लाख साधु, एक लाख छः हजार साध्वी दो लाख बयासी हजार श्रावक, चार लाख अठावन हजार श्राविका यह प्रभु का परिवार है।

३. त्रस दशक:- त्रस नामकर्म, बादर नामकर्म, पर्याप्त नामकर्म, प्रत्येक नामकर्म, स्थिर नामकर्म शुभ नामकर्म, सौभाग्य नामकर्म, सुस्वर नाम कर्म, आदेय नामकर्म, यश नामकर्म यह दस कर्म का समूह त्रस दशक कहलाता है। इसलिए इसका समावेश पुण्य तत्व मे होता है।

४. सकल कुशल वल्लि पुष्करावर्त मेघो, दुरित तिमिर भानु: कल्पवृक्षोपमान, भवजल निधि पोत: सर्व संपत्ति हेतु स भवतु सततं व: श्रेयसे शांतिनाथ - श्रेयसे पार्श्वनाथ:-

सकल कुशल की बेल, पुष्करावर्त मेघ, दुरित के अंधकार को दूर करने वाले सूर्य कल्पवृक्ष समान, भवसागर मे जहाज तथा सर्व संपत्ति के समान श्री शांतीनाथ भगवान तथा श्री पार्श्वनाथ भगवान, हमारा श्रेय कल्याण करने वाला हो।

५. जहा इन्द्रियो की परिपूर्णता न हो वहा धर्म स्वतंत्रता से संभावित नही है। इसमे जीव पराधीन हो जाता है। जैसे आँख न होने पर या कमजोर दृष्टि होने पर जयणा का पालन नही होगा धर्मग्रंथो का अध्ययन नही होगा। यदि सुन नही सकेगा तो भगवान की वाणी नहि सुन पाएगा, यदि बोल नही सकेगा तो परमात्मा की भक्ति का गुणगान नही कर सकेगा। पैर सहि-सलामत नही तो प्रभु दर्शन के लिए मंदिर, गुरु दर्शन के लिए उपाश्रय नही जा पाएगा। इसी तरह वह धर्मकार्य स्वतंत्रता पूर्वक नही कर पाएगा।